ASTRO ARPITA NATH

नकारात्मक - दुस्थान, मारक और त्रिषडाय भाव

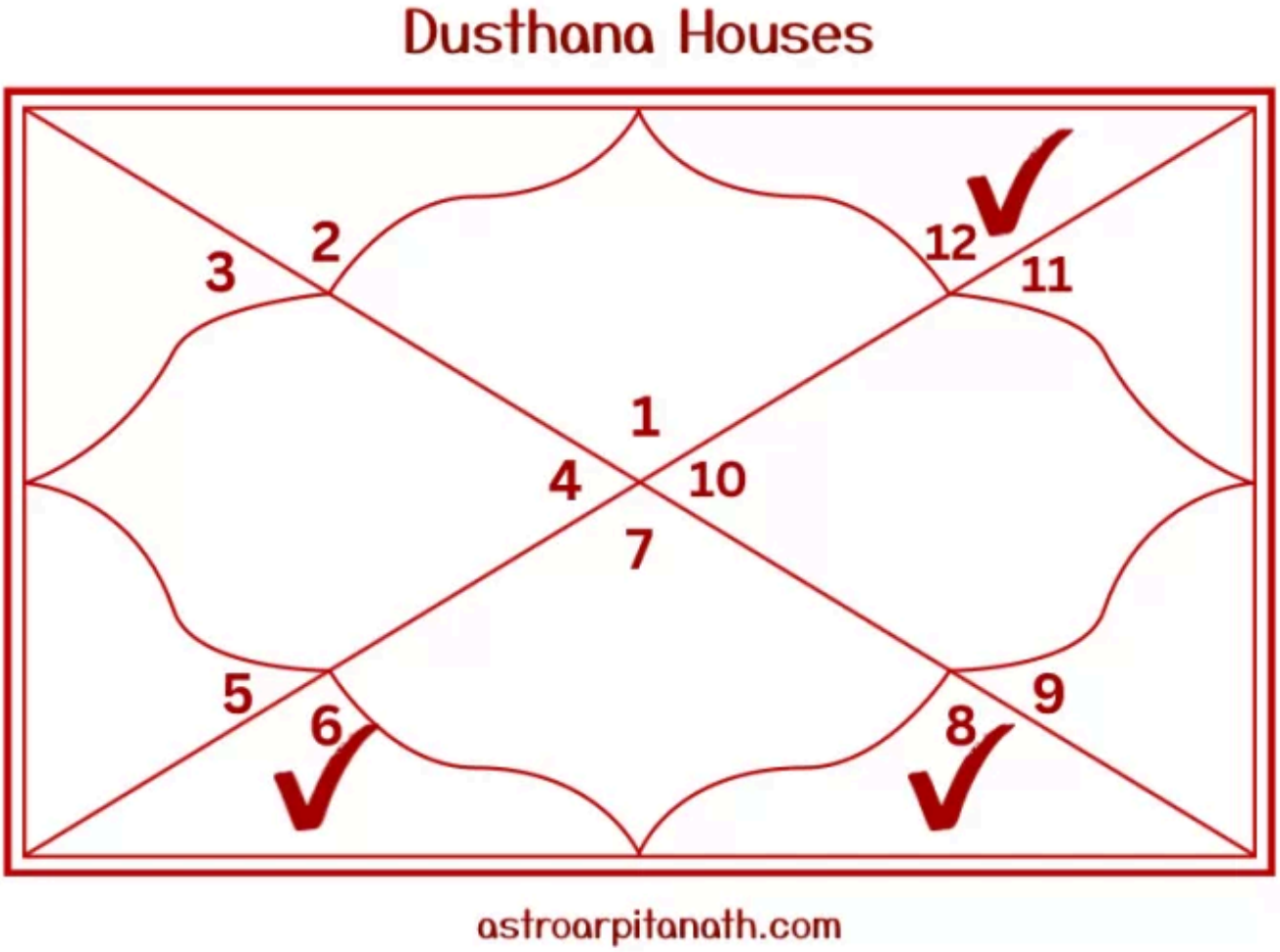
Arpita Nath द्वारा · कुंडली कैसे पढ़ें · 2026-07-28

जहाँ सकारात्मक भाव (केंद्र और त्रिकोण) स्थिरता और सौभाग्य का निर्माण करते हैं, वहीं वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में ऐसे विशिष्ट भावों का भी वर्गीकरण किया गया है जो परीक्षाएँ, परिवर्तन, ऊर्जा का ह्रास और मृत्यु-तुल्य कष्ट लाते हैं।

तीन मुख्य नकारात्मक/चुनौतीपूर्ण भाव वर्गीकरण दुःस्थान (Dusthana), मारक (Maraka) और त्रिषडाय (Trishadaya) हैं। भावों के इन समूहों को समझने से आपको यह पहचानने में मदद मिलती है कि जीवन कहाँ सावधानी, सहनशीलता, आंतरिक विकास और कार्मिक संतुलन की माँग करता है।

1. दुःस्थान भाव (कष्ट और परिवर्तन के भाव)

दुःस्थान (या त्रिक) भाव जन्म कुण्डली (Kundli) के वे भाव हैं जो जीवन के कठिन सबक सिखाते हैं: छठा, आठवां और बारहवां भाव।

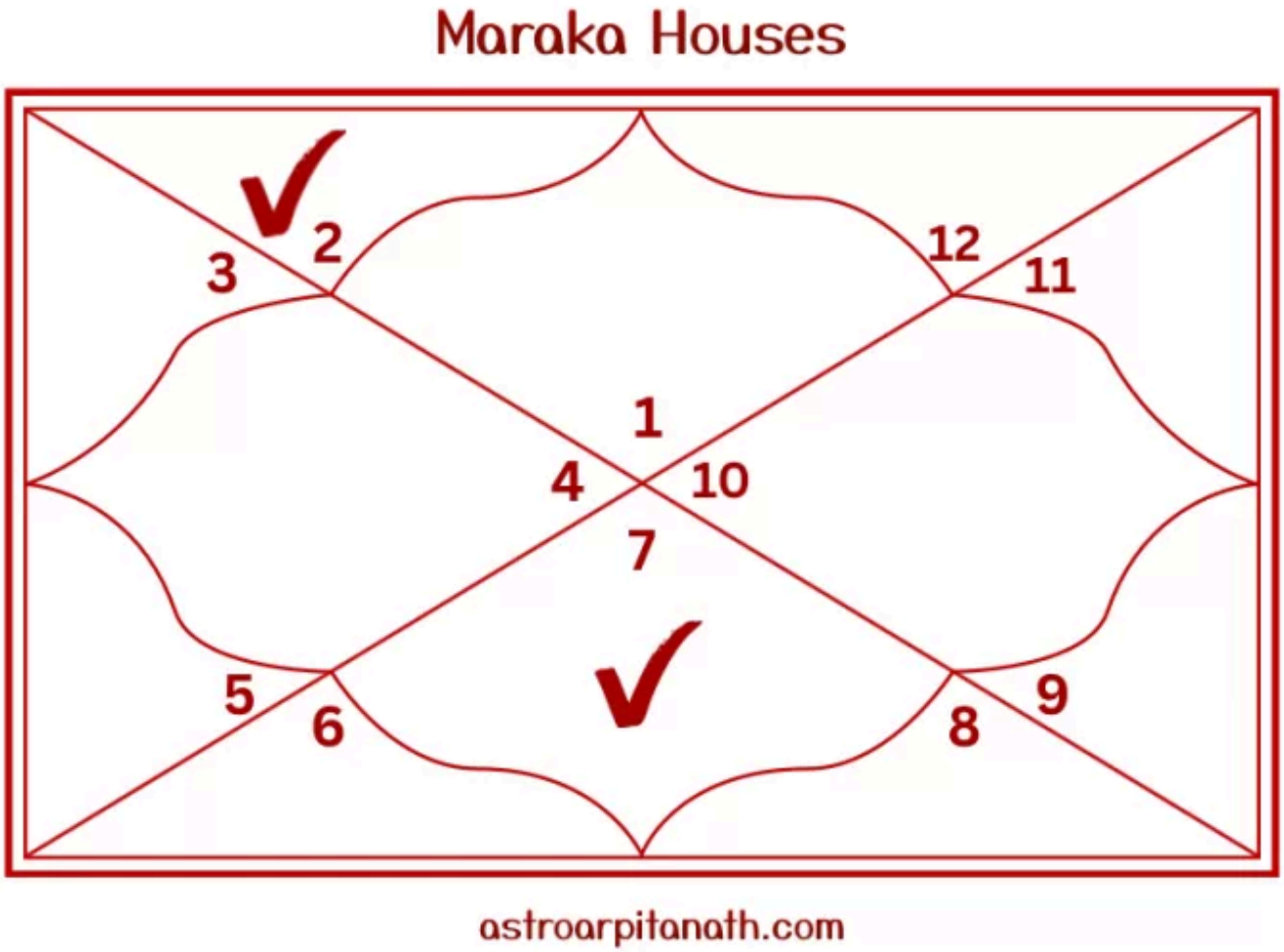


• **महत्व**: संघर्ष, बाधाओं और आध्यात्मिक शुद्धि के भावों के रूप में जाने जाने वाले ये भाव उन क्षेत्रों को नियंत्रित करते हैं जहाँ हमें शारीरिक और भावनात्मक परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है।
• **नियंत्रण**: ऋण/रोग (छठा), आकस्मिक घटनाएँ/दीर्घायु (आठवां), हानि/आध्यात्मिक मुक्ति (बारहवां)।
• **विस्तृत विवरण**:
• **छठा भाव (रोग, रिपु, ऋण)**: बीमारियाँ, शत्रु, कर्ज, विवाद और दैनिक कठिन परिश्रम।

• **आठवां भाव (रंध्र)**: आकस्मिक उतार-चढ़ाव, आयु, गुप्त विषय, पुरानी बीमारियाँ और गहरा परिवर्तन।
• **बारहवां भाव (व्यय)**: खर्चे, नुकसान, अलगाव, विदेश यात्रा, अस्पताल और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष)।

2. मारक भाव (मारक / ऊर्जा क्षीण करने वाले भाव)

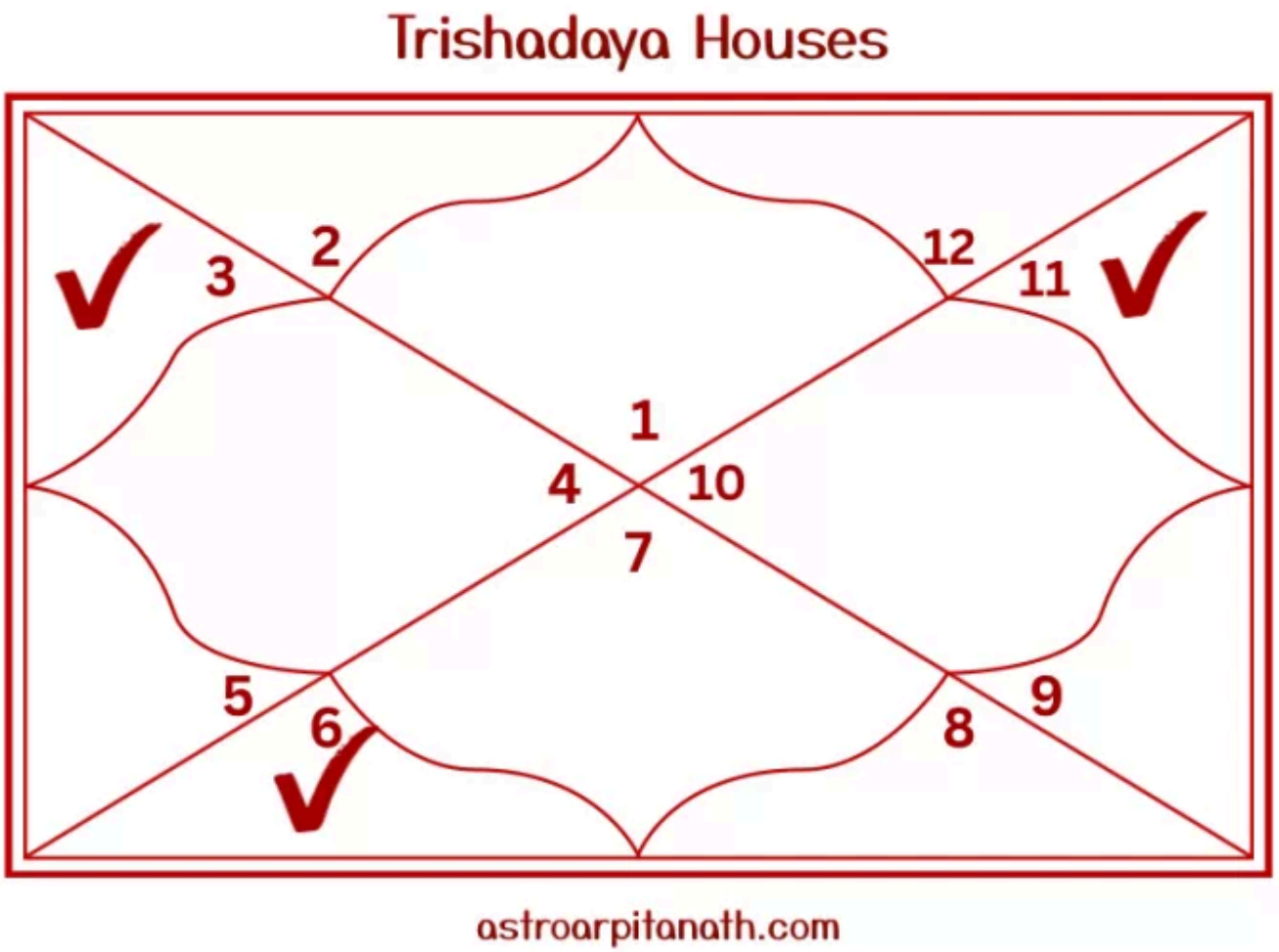
मारक भाव मृत्यु-तुल्य कष्ट देने वाले या शारीरिक ऊर्जा को क्षीण करने वाले भाव हैं: दूसरा और सातवां भाव।



• **महत्व**: संस्कृत में मारक का शाब्दिक अर्थ "मारने वाला" या "संहारक" होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मारक भाव के स्वामी की प्रत्येक दशा (Dasha) मृत्यु का कारण बनती है - बल्कि, ये ग्रह शारीरिक ऊर्जा को कम करते हैं, स्वास्थ्य की परीक्षा लेते हैं और जीवन में बड़े बदलाव लाते हैं।
• **नियंत्रण**: व्यावहारिक स्तर पर धन/वाणी/परिवार (दूसरा) और विवाह/व्यावसायिक साझेदार (सातवां); मुख्य दशाओं के दौरान शारीरिक ऊर्जा का ह्रास।
• **दूसरा और सातवां भाव ही क्यों?**
• आठवां भाव आयु को नियंत्रित करता है। इससे 12वां भाव (आयु की हानि का भाव) सातवां भाव है।
• तीसरा भाव जीवन शक्ति का दूसरा भाव है। इससे 12वां भाव (जीवन शक्ति की हानि का भाव) दूसरा भाव है।
• **मुख्य विशेषता:** अपनी महादशा या अंतर्दशा के दौरान, यदि सकारात्मक स्वास्थ्य कारकों का सहयोग न मिले, तो मारक स्वामी शारीरिक कमजोरी, गंभीर बीमारी या जीवन में भारी तनाव ला सकते हैं।

3. त्रिषडाय भाव (इच्छाओं और भौतिक संघर्ष के भाव)

त्रिषडाय भाव तीव्र इच्छा और अहंकार के भाव हैं: तीसरा, छठा और ग्यारहवां भाव।



• **महत्व**: यह शब्द त्रि (3), षट् (6), और आय/एकादश (11) से मिलकर बना है। ये भाव प्रबल व्यक्तिगत प्रेरणा, भौतिक इच्छाओं और प्रतिस्पर्धी महत्वाकांक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं।
• **नियंत्रण**: इच्छाशक्ति/साहस (तीसरा), संघर्ष/प्रतिस्पर्धा (छठा), बड़ा आर्थिक लाभ/महत्वाकांक्षा (ग्यारहवां)।
• **मुख्य विशेषता**: शुभ ग्रह (जैसे बृहस्पति या शुक्र) त्रिषडाय भावों के स्वामी होने पर अक्सर अपनी सौम्य आध्यात्मिक मिठास खो देते हैं, क्योंकि ये भाव व्यक्ति को उच्च चेतना के बजाय प्रतिस्पर्धी और सांसारिक लक्ष्यों की ओर आक्रामक रूप से ले जाते हैं।

एक सकारात्मक पहलू : विपरीत राजयोग (Vipreet Raj Yoga)

वैदिक ज्योतिष में, जब किसी दु:स्थान भाव (6ठे, 8वें या 12वें) का स्वामी किसी अन्य दु:स्थान भाव में स्थित होता है (और शुभ ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हो), तो यह विपरीत राजयोग (Vipreet Raj Yoga) का निर्माण करता है।

इस अनूठे योग का अर्थ है "विपरीत परिस्थितियों से विजय" - यह अपार धन, प्रसिद्धि या राजनीतिक प्रभाव प्रदान करता है, जो किसी बड़े संकट या झटके के तुरंत बाद या उसी के माध्यम से उत्पन्न होता है!

सारांश

• **दु:स्थान (6, 8, 12)**: यह आपको दृढ़ बनाने और आध्यात्मिक विकास की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए आपकी परीक्षा लेता है।
• **मारक (2, 7)**: यह शारीरिक विश्राम, जीवनशैली में संतुलन और स्वास्थ्य की रक्षा की माँग करता है।
• **त्रिषडाय (3, 6, 11)**: यह व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और भौतिक इच्छाओं को बढ़ावा देता है, जहाँ अहंकार पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है।

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।